परम् श्रद्धेय गुरूजी
आदरणीय श्री प्रेमराज जी जैन साहब

दैनिक भास्कर **जयपुर सिटी भास्कर** 22-05-2023

स्पेशल बर्थ डे | जैन आशुलिपि गुरु के शिष्य आज जयपुर में मनाएंगे खास जन्मदिन

140 शब्द प्रति मिनट लिखकर रिकॉर्ड बनाने वाले 102 साल के प्रेमराज आज भी सिखाते हैं स्टेनोग्राफी

सुनील शर्मा | जयपुर

जैन आशुलिपि गुरु प्रेमराज जैन का सोमवार को 102वां जन्मदिन है। इस दिन को सेलिब्रेट करने देशभर से उनके शिष्य जयपुर में जुट रहे हैं। प्रेमराज के प्रशिक्षित देश-दुनिया में लगभग 6000 स्टेनोग्राफर्स हैं। इनमें से अधिकतर शिष्य केंद्र, राज्य सरकारों, संसद, विधानसभा सचिवालयों, उच्च न्यायालयों, सर्वोच्च न्यायालय, राजकीय उपक्रमों, बैंकों सहित निजी संस्थानों में कार्यरत हैं, कई रिटायर्ड हो चुके हैं। सुबह-शाम इनके घर पर 25 से अधिक स्टूडेंट स्टेनोग्राफी सीखने आते हैं। प्रेमराज अपना सरनेम जैन लिखते हैं, लेकिन असल में वे राजपूत फैमिली से हैं। इनके शिष्य, ग्रामीण विकास विभाग में निजी सचिव रमन पारीक ने बताया कि हजारों युवाओं ने इनसे आशुलिपि का प्रशिक्षण प्राप्त कर रोजगार पाया है। वे 102 वर्ष की उम्र में भी एकदम स्वस्थ हैं।

संदूक ने खोला राज, नहीं छोड़ी पहचान

102 साल की उम्र में भी बच्चों को ट्रेनिंग देते प्रेमराज।

प्रेमराज जब 6 वर्ष के थे तब उनकी मां नर्मदा देवी और 10 वर्ष की आयु में पिता रघुनाथ सिंह का देहांत हो गया था। उनका लालन-पालन एक पाठशाला के संचालक लाला पूनमचंद जैन ने किया। वहीं से उनके नाम के साथ जैन जुड़ गया। वे बताते हैं कि वर्ष 1952-53 में जैन वीराश्रम के पुराने संदूक में मिले दस्तावेज से पता चला कि वे तत्कालीन जोधपुर व वर्तमान जालौर जिले के नौरवा ग्राम के राजपुरोहित परिवार से हैं, इसके बावजूद उन्होंने जैन वीराश्रम से प्राप्त 'जैन' पहचान को नहीं छोड़ा।

सहायक शासन सचिव के पद से हुए सेवानिवृत्त

आशुलिपि गुरु जैन के बड़े बेटे ज्योति प्रकाश ने बताया, पिता ने वर्ष 1938 में तत्कालीन अजमेर मेरवाड़ा राजनीतिक सम्मेलन में आयोजित अखिल भारतीय हिंदी संकेत लिपि लेखन प्रतियोगिता में अपने नाम एक रिकॉर्ड बनाया था। 140 शब्द प्रति मिनट की गति से पूरे दस मिनट तक लगातार लिखते हुए प्रथम स्थान प्राप्त कर सम्मेलन के सभापति भूलाभाई देसाई के हाथों से स्वर्ण पदक प्राप्त किया। मई, 1977 में राजस्थान विधानसभा से सहायक शासन सचिव के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद इन्होंने लोक प्रशिक्षण संस्थान, गणगौरी बाजार, जयपुर में आशुलिपि का निशुल्क प्रशिक्षण देने का कार्य शुरू किया।

- 22 मई 1922 को जन्में आदरणीय गुरूजी श्री प्रेमराजजी जैन लगभग 6 वर्ष की आयु में माता श्रीमती नर्मदा देवी व 10 वर्ष की आयु में पिता श्री रघुनाथसिंहजी के वात्सल्य से वंचित हो गये। उनका लालन पालन श्री पूनमचन्दजी जैन ने किया, आपने जैन धर्म शिक्षा के *आचार्य* व संस्कृत शिक्षा में *शास्त्री* की उपाधि प्राप्त की।

- आपने हिन्दी आशुलिपि में 140 शब्द प्रति मिनट लिखने की योग्यता प्राप्त की। आप तत्कालीन बीकानेर विधानसभा में व बीकानेर का राजस्थान में विलय होने के बाद राजस्थान विधानसभा में रिपोर्टर पद प्राप्त किया।

- आपने सन् 1938 के जनवरी मास में तत्कालीन अजमेर मेरवाड़ा राजनैतिक सम्मेलन के तत्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी संकेत लिपि लेखन प्रतियोगिता में 140 शब्द प्रति मिनट की गति से पूरे दस मिनट तक लगातार लिखते हुए प्रथम स्थान प्राप्त कर सम्मेलन के सभापति स्व. श्री भूलाभाई देसाई के हाथों से स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

- वर्ष 1952-53 में पुराने दस्तावेजों से जानकारी हुई कि आप तत्कालीन जोधपुर व वर्तमान जालौर जिले के नौरवा ग्राम के राजपुरोहित परिवार से हैं। इसके बावजूद आज भी आप 'जैन' शब्द अपने नाम के साथ लगाते हैं

- वर्ष 1977 में सेवानिवृत्त होने से पूर्व से ही आप निजी तौर पर लोक प्रशिक्षण संस्थान, जयपुर में आशुलिपि प्रशिक्षण का कार्य करने लगे तथा वर्ष 1994 से अपने बापू नगर जयपुर में प्रशिक्षण कक्षाएं प्रारम्भ कीं, आप 46 वर्ष से लगातार और आज 102 वर्ष की उम्र में भी निरन्तर हिन्दी आशुलिपि सिखा रहे हैं।

- आप से प्रशिक्षित लगभग 7 हजार से अधिक प्रशिक्षार्थी केन्द्र सरकार, विभिन्न राज्य सरकारों, संसद, विधानसभा सचिवालयों, उच्च न्यायालयों, सर्वोच्च न्यायालय, राजकीय उपक्रमों, बैंकों सहित निजी संस्थानों में कार्यरत हैं /अनेक प्रशिक्षार्थी सेवानिवृत्त भी हो चुके हैं।
- आपकी स्नेहिल प्रशिक्षण कक्षाओं की विशेष बात है, कोई शुल्क देता है तो ठीक, नहीं देता है तो ठीक, आपकी इच्छा केवल एक ही है कि बच्चे आशुलिपि सीखें और रोजगार पाएं।
- इन कक्षाओं के माध्यम से जैन आशुलिपि को जिन्दा रखने का श्रेय भी आपको जाता है। आपने सेवानिवृत्ति के पश्चात आशुलिपि के प्रशिक्षण का कार्य कर न सिर्फ बेराजगार बच्चों को रोजगार दिलाया, बल्कि जैन आशुलिपि को जीवित भी रखा व अमिट बना दिया।